test

01 January 1990, Monday
01:00:00 AM(5.5)
New Delhi, India

रेखांश	: 77.12E
अक्षांश	: 28.36N
साम्पातिक काल	: 7:19:34
स्थानीय मानक समय	: 00:38:48
अयनांश	: 23.72 एन सी लाहिरी

लग्न	: कन्या
लग्नपति	: बुध
राशी	: कुम्भ
राशी स्वामी	: शनि
नक्षत्र	: धनिष्ठा
नक्षत्र स्वामी	: मंगल
चरण	: 2
नाड़ी	: मध्य
नाड़ी पद	: आदि
तिथि	: चतुर्थी शुक्ल
पाया	: स्वर्ण
सूर्य सिद्धांत योग	: वज्र
करण	: विष्टि
वर्ण	: शूद्र
वर्ण	: शूद्र
वश्य	: जलचर
योनि	: सिंह(स्त्री.)
विहग	: वायस
गण	: राक्षस
प्रथम अक्षर	: ग, गी, गू, गे
सूर्य राशि	: धनु

लग्न कुन्डली

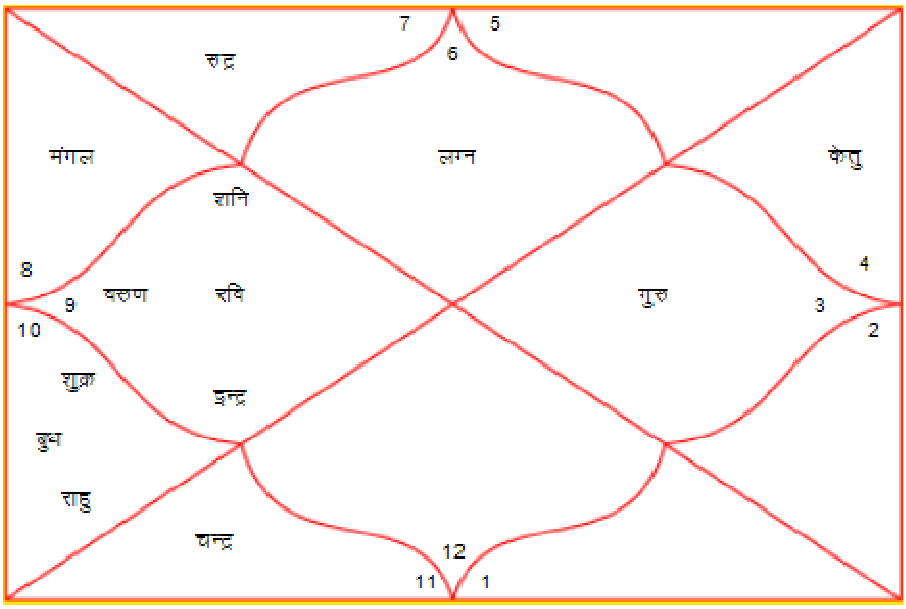

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशी	स्वामी	डिग्री	नक्षत्र–पद	स्वामी
लग्न		कन्या	बुध	23:46:34	चित्रा–1	मंगल
रवि	मार्गी	धनु	गुरु	16:23:45	पूर्वाषाढ़ा–1	शुक्र
बुध	वक्री	मकर	शनि	2:6:43	उत्तराषाढ़–2	रवि
शुक्र	वक्री	मकर	शनि	12:35:5	श्रवण–1	चन्द्र
मंगल	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	15:47:57	अनुराधा–4	शनि
गुरु	वक्री	मिथुन	बुध	11:31:28	अरिद्रा–2	राहु
शनि	मार्गी	धनु	गुरु	21:51:34	पूर्वाषाढ़ा–3	शुक्र
चन्द्र	मार्गी	कुम्भ	शनि	0:19:41	धनिष्ठा–3	मंगल
राहु	वक्री	मकर	शनि	24:45:17	धनिष्ठा–1	मंगल
केतु	वक्री	कर्क	चन्द्र	24:45:17	आश्लेषा–3	बुध
इन्द्र	मार्गी	धनु	गुरु	12:1:38	मूला–4	केतु
वरुण	मार्गी	धनु	गुरु	18:17:43	पूर्वाषाढ़ा–2	शुक्र
रुद्र	मार्गी	तुला	शुक्र	23:21:27	विशाखा–2	गुरु

आपके बच्चे की जन्मकुण्डली, आपके लिये

आपके बच्चे की जन्मपत्री से आप यह जान पायेंगे कि आपका पुत्री या पुत्र से आप किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर सकते हैं व उनका भाग्य कैसा होगा. इसमें दी गये उपायों के द्वारा आप उनकी भाग्यवृद्धी भी कर सकते हैं. साथ ही यह भी जान पायेंगे कि ज्योतिष अनुसार वह आपके लिये कितने भाग्यशाली होंगे.

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशी	स्वामी	डिग्री	नक्षत्र–पद	स्वामी	कारक	——
लग्न		कन्या	बुध	23:46:34	चित्रा–1	मंगल		
रवि	मार्गी	धनु	गुरु	16:23:45	पूर्वाषाढ़ा–1	शुक्र	पिता	मित्र भाव में
बुध	वक्री	मकर	शनि	2:6:43	उत्तराषाढ़–2	रवि	बुद्धि	
शुक्र	वक्री	मकर	शनि	12:35:5	श्रवण–1	चन्द्र	जीवनसाथी	मित्र भाव में
मंगल	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	15:47:57	अनुराधा–4	शनि	विक्रम	सम
गुरु	वक्री	मिथुन	बुध	11:31:28	अरिद्रा–2	राहु	धनसम्पदा	
शनि	मार्गी	धनु	गुरु	21:51:34	पूर्वाषाढ़ा–3	शुक्र	परमायु	
चन्द्र	मार्गी	कुम्भ	शनि	0:19:41	धनिष्ठा–3	मंगल	माता	
राहु	वक्री	मकर	शनि	24:45:17	धनिष्ठा–1	मंगल	अभिलाषा	मित्र भाव में
केतु	वक्री	कर्क	चन्द्र	24:45:17	आश्लेषा–3	बुध	मोक्ष	
इन्द्र	मार्गी	धनु	गुरु	12:1:38	मूला–4	केतु		
वरुण	मार्गी	धनु	गुरु	18:17:43	पूर्वाषाढ़ा–2	शुक्र		
रुद्र	मार्गी	तुला	शुक्र	23:21:27	विशाखा–2	गुरु		

लग्न कुन्डली

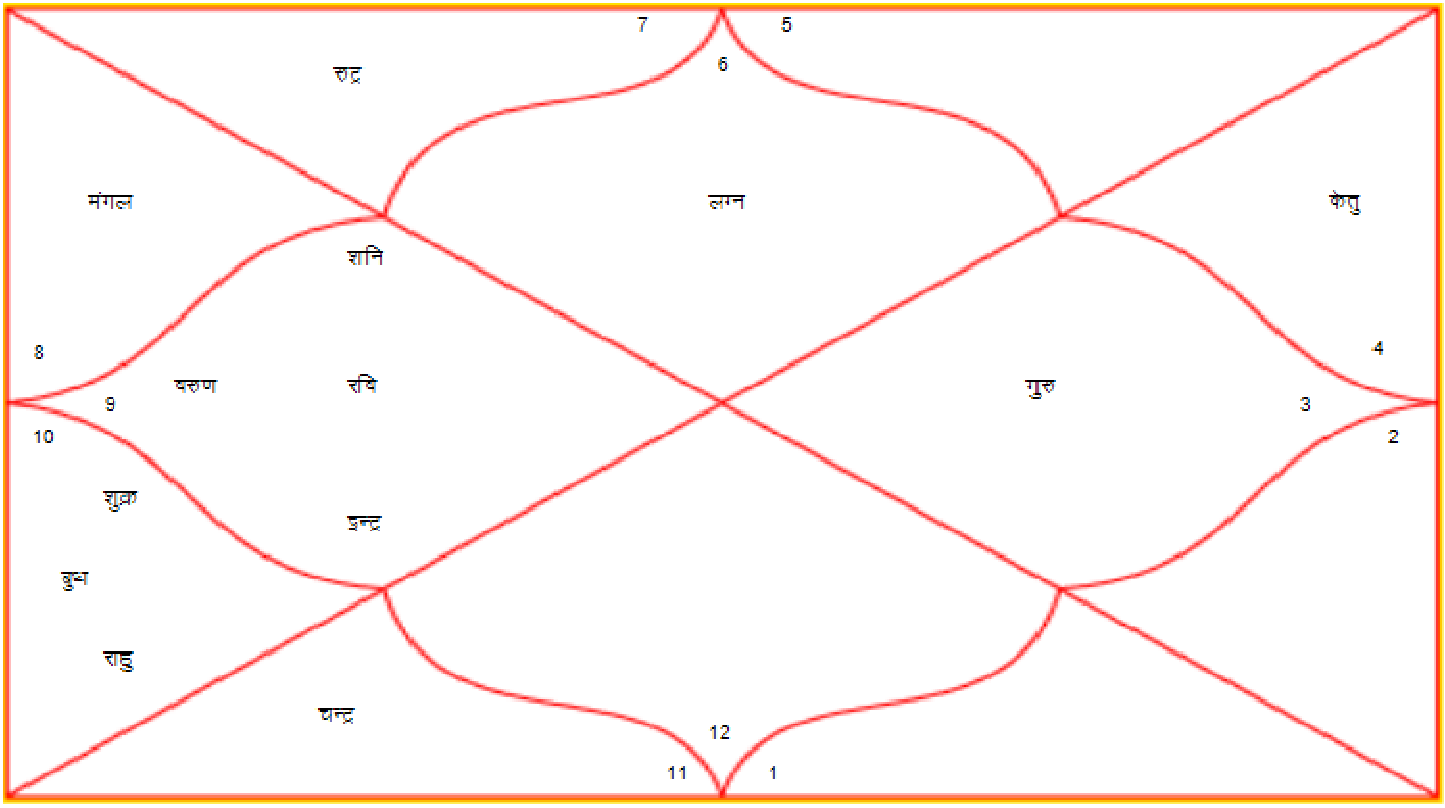

भाव सारिणी

भाव	भाव आरंभ		भाव मध्य	
1	तुला	188:55:18	तुला	204:4:1
2	वृश्चिक	219:12:45	वृश्चिक	234:21:28
3	धनु	249:30:12	धनु	264:38:55
4	मकर	279:30:12	मकर	294:21:28
5	कुम्भ	309:12:45	कुम्भ	324:4:1
6	मीन	338:55:18	मीन	353:46:34
7	मेष	8:55:18	मेष	24:4:1
8	वृषभ	39:12:45	वृषभ	54:21:28
9	मिथुन	69:30:12	मिथुन	84:38:55
10	कर्क	99:30:12	कर्क	114:21:28
11	सिंह	129:12:45	सिंह	144:4:1
12	कन्या	158:55:18	कन्या	173:46:34

भाव चलित चक्र

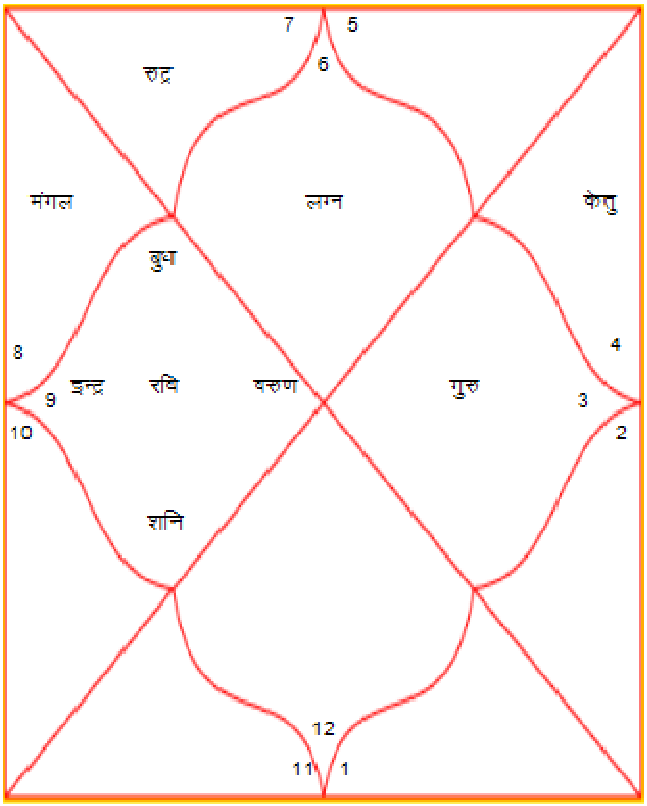

चन्द्र कुन्डली

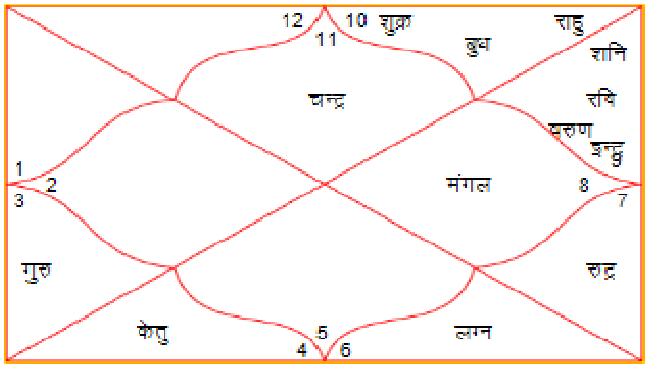

रवि

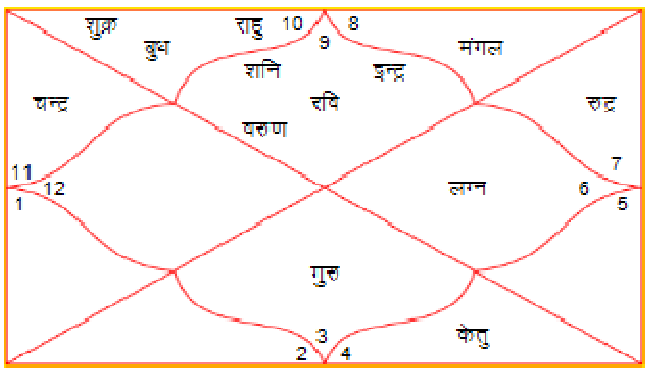

लग्न

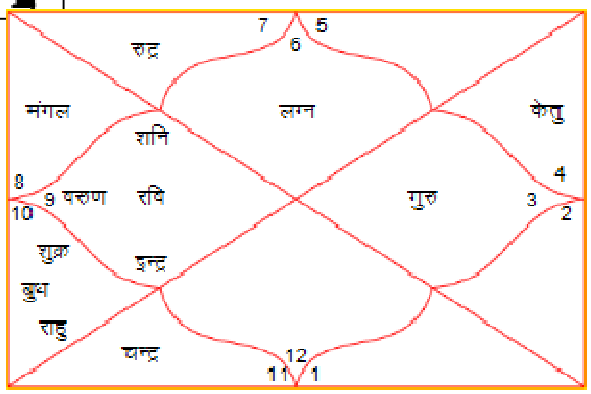

होरा

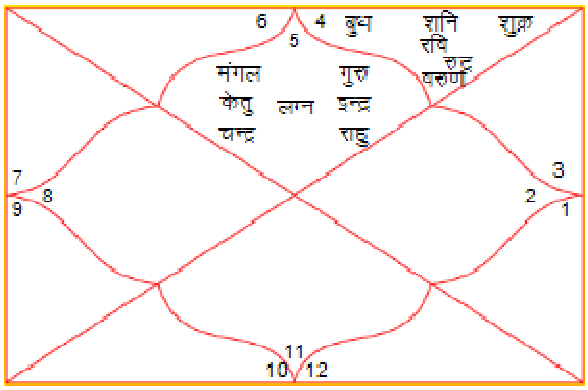

द्रेक्कान

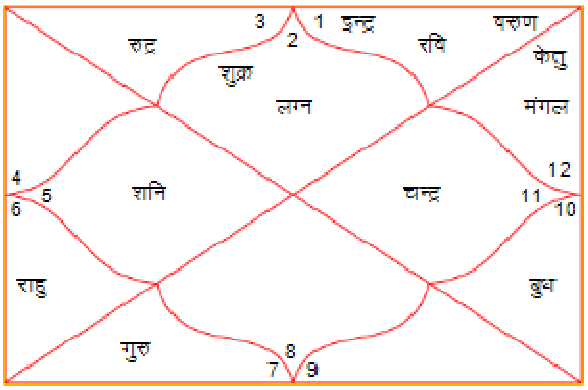

चतुर्थांश

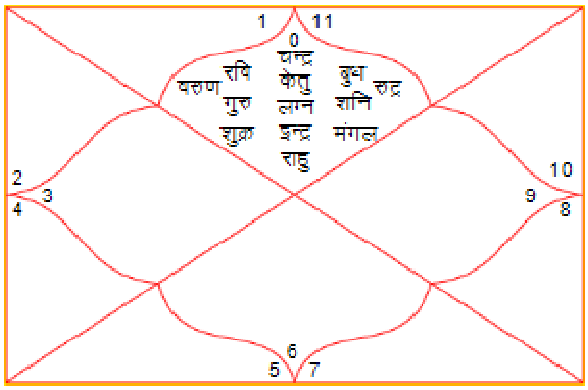

सप्तमांश

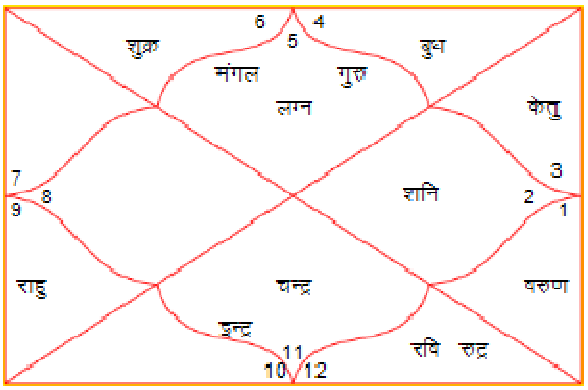

नवमांश

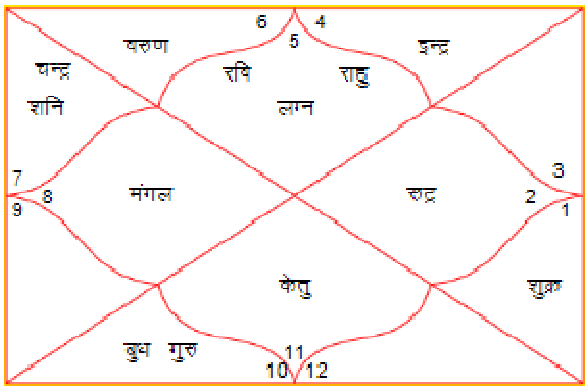

दशमांश

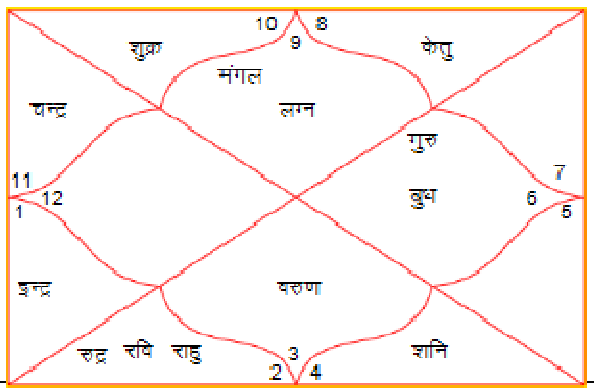

द्वादशांश

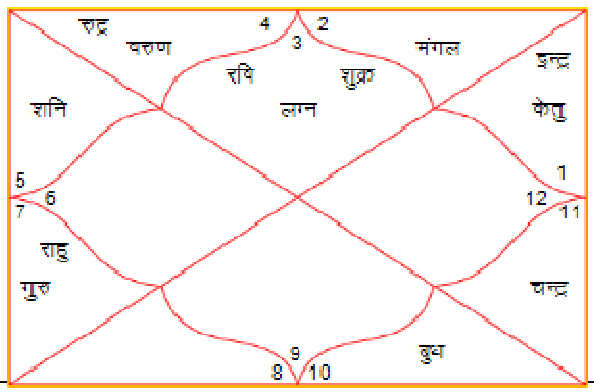

षोडशांश

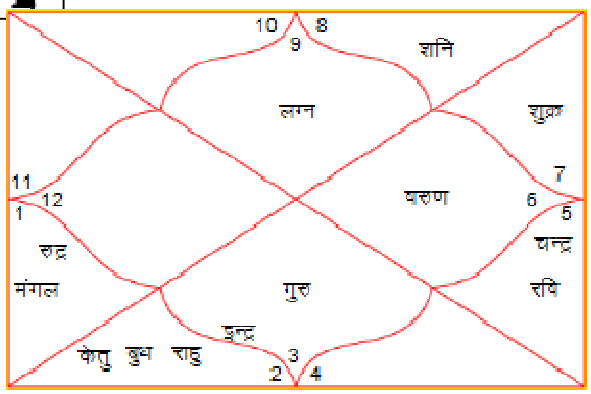

विंशांश

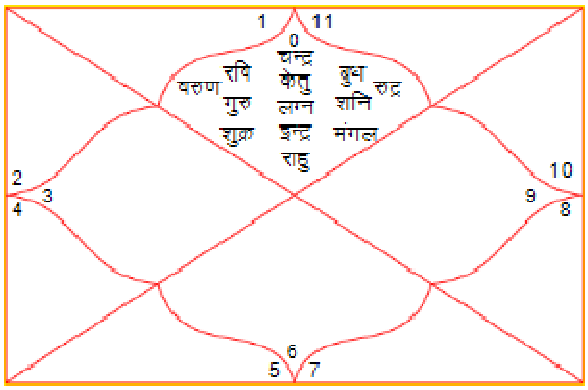

चतुर्विंशांश

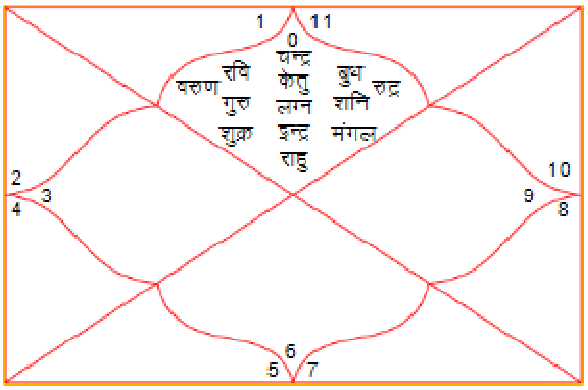

सप्तविंशांश

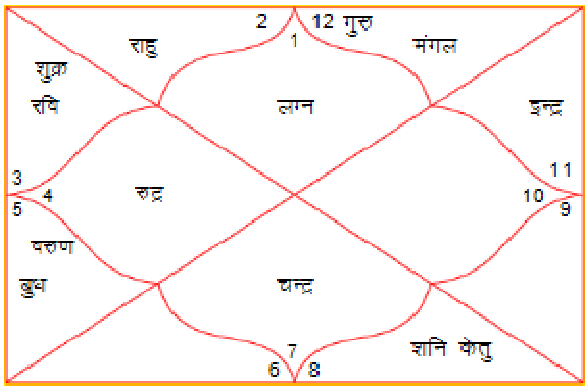

त्रिंशांश

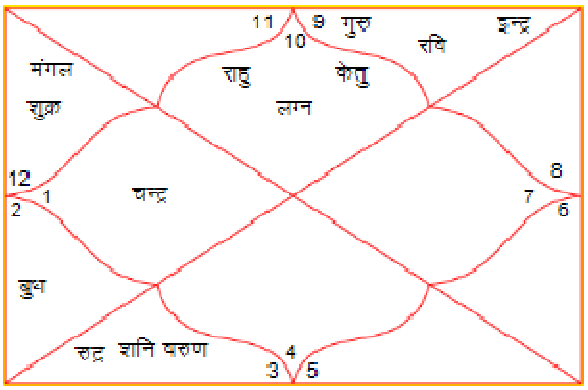

खवेदांश

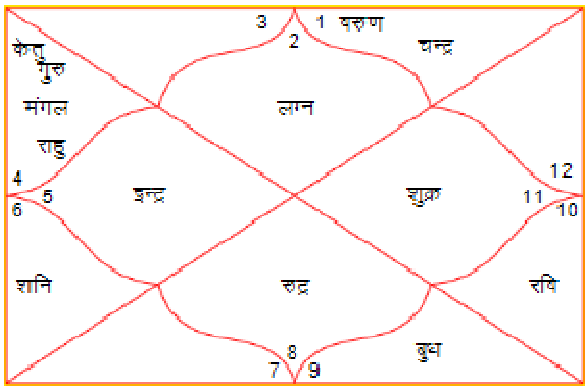

अक्षवेदांश

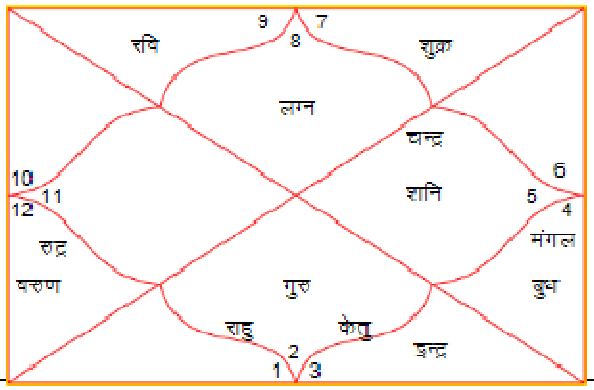

षष्टि अंश

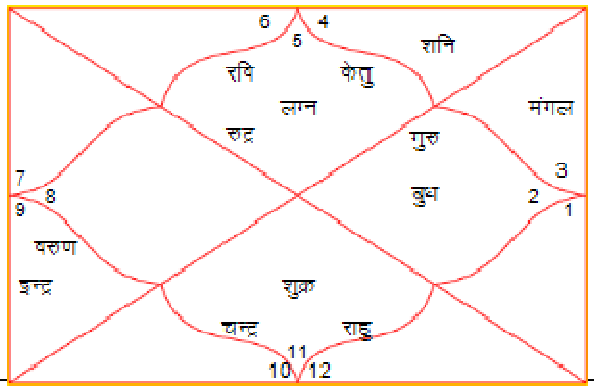

अष्टकवर्ग (शोधनपूर्व)

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
रवि	2	2	6	6	4	4	4	5	7	2	3	3	48
बुध	4	6	4	4	4	6	4	6	5	4	3	4	54
शुक्र	6	4	2	4	2	6	7	4	2	5	4	6	52
मंगल	3	4	5	3	3	4	2	5	4	0	3	3	39
गुरु	3	5	7	3	4	6	5	4	5	4	6	4	56
शनि	4	2	4	3	2	4	5	4	5	2	2	2	39
चन्द्र	6	5	3	6	3	4	4	4	3	3	4	4	49
कुल	28	28	31	29	22	34	31	32	31	20	25	26	337
राहु	4	2	5	3	4	4	3	5	5	4	4	1	44
लग्न	5	3	3	3	3	5	4	6	3	4	6	4	49

त्रिकोण शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	0	0	3	3	2	2	1	2	5	0	0	0
बुध	0	2	1	0	0	2	1	2	1	0	0	0
शुक्र	4	0	0	0	0	2	5	0	0	1	2	2
मंगल	0	4	3	0	0	4	0	2	1	0	1	0
गुरु	0	1	2	0	1	2	0	1	2	0	1	1
शनि	2	0	2	1	0	2	3	2	3	0	0	0
चन्द्र	3	2	0	2	0	1	1	0	0	0	1	0

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	0	0	3	3	2	0	1	2	5	0	0	0
बुध	0	1	1	0	0	1	1	2	1	0	0	0
शुक्र	4	0	0	0	0	2	5	0	0	1	2	2
मंगल	0	4	3	0	0	3	0	2	1	0	1	0
गुरु	0	1	2	0	1	0	0	1	2	0	1	0
शनि	0	0	2	1	0	0	3	2	3	0	0	0
चन्द्र	3	1	0	2	0	1	1	0	0	0	1	0

शोध्य पिन्ड

पिन्ड	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र
ग्रह	96	36	27	61	53	66	5
राशी	124	55	124	115	73	84	62
शोध्य	220	91	151	176	126	150	67

ग्रहावस्था

	अवस्था 3	अवस्था 5	अवस्था 6	अवस्था 9	अवस्था 10	अवस्था 12
रवि	स्वप्न	युवा	मुदित	शान्त	हर्षित	नृत्यलिप्सा
बुध	स्वप्न	मृत	लज्जित	दीन	पीड़ित	सभास्थ
शुक्र	स्वप्न	युवा	मुदित	प्रमुदित	हर्षित	सभास्थ
मंगल	जाग्रत	युवा	मुदित	स्वस्थ	स्वस्थ	आगम
गुरु	स्वप्न	कुमार	मुदित	दीन	शान्त	निद्रा
शनि	स्वप्न	वृद्ध	क्षुदित	दीन	शान्त	उपवेशन
चन्द्र	स्वप्न	बाल	क्षुदित	दीन	–––	आगमन
राहु	स्वप्न	बाल	मुदित	दुखित	हर्षित	नेत्रपानी
केतु	स्वप्न	बाल	तृषित	दीन	शान्त	शयन

कारक ग्रह

	स्थिर कारक	सप्तकारक	अष्टकारक
रवि	पिता	मातृ	मातृ
बुध	बुद्धि	–	कलत्र
शुक्र	जीवनसाथी	ज्ञाति	पुत्र
मंगल	विक्रम	पुत्र	पितृ
गुरु	धनसम्पदा	कलत्र	ज्ञाती
शनि	परमायु	भ्रातृ	भ्रातृ
चन्द्र	माता	–	–
राहु	अभिलाषा	आत्म	आत्मा
केतु	मोक्ष	आमात्य	अमात्य

नव तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्व भाद्रपद	उत्तर भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
मृगशिर	अरिद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वा	उत्तरा	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़	श्रवण

ग्रहमैत्री

नैसर्गिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि		सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र		मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम
शुक्र	शत्रु	मित्र		सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	सम		मित्र	सम	मित्र	सम	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र		सम	मित्र	सम	सम
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम		शत्रु	मित्र	सम
चन्द्र	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम		सम	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम		मित्र
केतु	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	

तात्कालिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि		मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र		शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु		मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	मित्र		शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु		शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु		मित्र	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र		मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र		शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	

पन्चधा

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि		मित्र	सम	परममित्र	सम	परमशत्रु	परममित्र	मित्र	शत्रु
बुध	परममित्र		सम	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु
शुक्र	सम	सम		मित्र	शत्रु	परममित्र	सम	परमशत्रु	सम
मंगल	परममित्र	सम	मित्र		सम	मित्र	परममित्र	मित्र	परमशत्रु
गुरु	सम	परमशत्रु	परमशत्रु	सम		शत्रु	सम	शत्रु	मित्र
शनि	परमशत्रु	परममित्र	परममित्र	सम	शत्रु		सम	परममित्र	शत्रु
चन्द्र	परममित्र	परममित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र		मित्र	परमशत्रु
राहु	सम	सम	परमशत्रु	सम	शत्रु	परममित्र	मित्र		सम
केतु	शत्रु	शत्रु	सम	परमशत्रु	मित्र	शत्रु	परमशत्रु	सम	

विंशोत्तरी दशा (महादशा)

मंगल

	30 Apr 86 - 30 Apr 93
मंगल	30 Apr 1986 - 26 Sep 1986
राहु	26 Sep 1986 - 15 Oct 1987
गुरु	15 Oct 1987 - 20 Sep 1988
शनि	20 Sep 1988 - 29 Oct 1989
बुध	29 Oct 1989 - 26 Oct 1990
केतु	26 Oct 1990 - 25 Mar 1991
शुक्र	25 Mar 1991 - 24 May 1992
रवि	24 May 1992 - 29 Sep 1992
चन्द्र	29 Sep 1992 - 30 Apr 1993

राहु

	30 Apr 93 - 30 Apr 11
राहु	30 Apr 1993 - 11 Jan 1996
गुरु	11 Jan 1996 - 06 Jun 1998
शनि	06 Jun 1998 - 13 Apr 2001
बुध	13 Apr 2001 - 30 Oct 2003
केतु	30 Oct 2003 - 18 Nov 2004
शुक्र	18 Nov 2004 - 18 Nov 2007
रवि	18 Nov 2007 - 11 Oct 2008
चन्द्र	11 Oct 2008 - 12 Apr 2010
मंगल	12 Apr 2010 - 30 Apr 2011

गुरु

	30 Apr 11 - 30 Apr 27
गुरु	30 Apr 2011 - 18 Jun 2013
शनि	18 Jun 2013 - 30 Dec 2015
बुध	30 Dec 2015 - 06 Apr 2018
केतु	06 Apr 2018 - 13 Mar 2019
शुक्र	13 Mar 2019 - 12 Nov 2021
रवि	12 Nov 2021 - 31 Aug 2022
चन्द्र	31 Aug 2022 - 31 Dec 2023
मंगल	31 Dec 2023 - 05 Dec 2024
राहु	05 Dec 2024 - 01 May 2027

शनि

	30 Apr 27 - 30 Apr 46
शनि	30 Apr 2027 - 03 May 2030
बुध	03 May 2030 - 11 Jan 2033
केतु	11 Jan 2033 - 20 Feb 2034
शुक्र	20 Feb 2034 - 21 Apr 2037
रवि	21 Apr 2037 - 03 Apr 2038
चन्द्र	03 Apr 2038 - 02 Nov 2039
मंगल	02 Nov 2039 - 12 Dec 2040
राहु	12 Dec 2040 - 18 Oct 2043
गुरु	18 Oct 2043 - 01 May 2046

बुध

	30 Apr 46 - 30 Apr 63
बुध	30 Apr 2046 - 26 Sep 2048
केतु	26 Sep 2048 - 24 Sep 2049
शुक्र	24 Sep 2049 - 24 Jul 2052
रवि	24 Jul 2052 - 30 May 2053
चन्द्र	30 May 2053 - 30 Oct 2054
मंगल	30 Oct 2054 - 27 Oct 2055
राहु	27 Oct 2055 - 16 May 2058
गुरु	16 May 2058 - 21 Aug 2060
शनि	21 Aug 2060 - 01 May 2063

केतु

	30 Apr 63 - 30 Apr 70
केतु	30 Apr 2063 - 26 Sep 2063
शुक्र	26 Sep 2063 - 26 Nov 2064
रवि	26 Nov 2064 - 03 Apr 2065
चन्द्र	03 Apr 2065 - 02 Nov 2065
मंगल	02 Nov 2065 - 31 Mar 2066
राहु	31 Mar 2066 - 19 Apr 2067
गुरु	19 Apr 2067 - 25 Mar 2068
शनि	25 Mar 2068 - 03 May 2069
बुध	03 May 2069 - 30 Apr 2070

शुक्र

	30 Apr 70 - 30 Apr 90
शुक्र	30 Apr 2070 - 30 Aug 2073
रवि	30 Aug 2073 - 30 Aug 2074
चन्द्र	30 Aug 2074 - 30 Apr 2076
मंगल	30 Apr 2076 - 29 Jun 2077
राहु	29 Jun 2077 - 29 Jun 2080
गुरु	29 Jun 2080 - 28 Feb 2083
शनि	28 Feb 2083 - 30 Apr 2086
बुध	30 Apr 2086 - 28 Feb 2089
केतु	28 Feb 2089 - 30 Apr 2090

रवि

	30 Apr 90 - 30 Apr 96
रवि	30 Apr 2090 - 18 Aug 2090
चन्द्र	18 Aug 2090 - 16 Feb 2091
मंगल	16 Feb 2091 - 24 Jun 2091
राहु	24 Jun 2091 - 18 May 2092
गुरु	18 May 2092 - 06 Mar 2093
शनि	06 Mar 2093 - 16 Feb 2094
बुध	16 Feb 2094 - 24 Dec 2094
केतु	24 Dec 2094 - 01 May 2095
शुक्र	01 May 2095 - 01 May 2096

चन्द्र

	30 Apr 96 - 30 Apr 06
चन्द्र	30 Apr 2096 - 01 Mar 2097
मंगल	01 Mar 2097 - 30 Sep 2097
राहु	30 Sep 2097 - 31 Mar 2099
गुरु	31 Mar 2099 - 31 Jul 2100
शनि	31 Jul 2100 - 01 Mar 2102
बुध	01 Mar 2102 - 31 Jul 2103
केतु	31 Jul 2103 - 29 Feb 2104
शुक्र	29 Feb 2104 - 30 Oct 2105
रवि	30 Oct 2105 - 01 May 2106

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर

गुरु

	30 Apr 2011 - 18 Jun 2013
गुरु	30 Apr 11 - 12 Aug 11
शनि	12 Aug 11 - 14 Dec 11
बुध	14 Dec 11 - 02 Apr 12
केतु	02 Apr 12 - 17 May 12
शुक्र	17 May 12 - 24 Sep 12
रवि	24 Sep 12 - 02 Nov 12
चन्द्र	02 Nov 12 - 06 Jan 13
मंगल	06 Jan 13 - 21 Feb 13
राहु	21 Feb 13 - 17 Jun 13

शनि

	18 Jun 2013 - 30 Dec 2015
शनि	18 Jun 13 - 11 Nov 13
बुध	11 Nov 13 - 23 Mar 14
केतु	23 Mar 14 - 16 May 14
शुक्र	16 May 14 - 17 Oct 14
रवि	17 Oct 14 - 02 Dec 14
चन्द्र	02 Dec 14 - 17 Feb 15
मंगल	17 Feb 15 - 12 Apr 15
राहु	12 Apr 15 - 29 Aug 15
गुरु	29 Aug 15 - 30 Dec 15

बुध

	30 Dec 2015 - 06 Apr 2018
बुध	30 Dec 15 - 25 Apr 16
केतु	25 Apr 16 - 12 Jun 16
शुक्र	12 Jun 16 - 28 Oct 16
रवि	28 Oct 16 - 09 Dec 16
चन्द्र	09 Dec 16 - 16 Feb 17
मंगल	16 Feb 17 - 05 Apr 17
राहु	05 Apr 17 - 07 Aug 17
गुरु	07 Aug 17 - 26 Nov 17
शनि	26 Nov 17 - 06 Apr 18

केतु

	06 Apr 2018 - 13 Mar 2019
केतु	06 Apr 18 - 26 Apr 18
शुक्र	26 Apr 18 - 22 Jun 18
रवि	22 Jun 18 - 09 Jul 18
चन्द्र	09 Jul 18 - 06 Aug 18
मंगल	06 Aug 18 - 26 Aug 18
राहु	26 Aug 18 - 16 Oct 18
गुरु	16 Oct 18 - 01 Dec 18
शनि	01 Dec 18 - 24 Jan 19
बुध	24 Jan 19 - 13 Mar 19

शुक्र

	13 Mar 2019 - 12 Nov 2021
शुक्र	13 Mar 19 - 22 Aug 19
रवि	22 Aug 19 - 10 Oct 19
चन्द्र	10 Oct 19 - 30 Dec 19
मंगल	30 Dec 19 - 25 Feb 20
राहु	25 Feb 20 - 20 Jul 20
गुरु	20 Jul 20 - 27 Nov 20
शनि	27 Nov 20 - 30 Apr 21
बुध	30 Apr 21 - 15 Sep 21
केतु	15 Sep 21 - 11 Nov 21

रवि

	12 Nov 2021 - 31 Aug 2022
रवि	12 Nov 21 - 26 Nov 21
चन्द्र	26 Nov 21 - 21 Dec 21
मंगल	21 Dec 21 - 07 Jan 22
राहु	07 Jan 22 - 19 Feb 22
गुरु	19 Feb 22 - 30 Mar 22
शनि	30 Mar 22 - 16 May 22
बुध	16 May 22 - 26 Jun 22
केतु	26 Jun 22 - 13 Jul 22
शुक्र	13 Jul 22 - 31 Aug 22

चन्द्र

	31 Aug 2022 - 31 Dec 2023
चन्द्र	31 Aug 22 - 10 Oct 22
मंगल	10 Oct 22 - 08 Nov 22
राहु	08 Nov 22 - 20 Jan 23
गुरु	20 Jan 23 - 26 Mar 23
शनि	26 Mar 23 - 11 Jun 23
बुध	11 Jun 23 - 19 Aug 23
केतु	19 Aug 23 - 16 Sep 23
शुक्र	16 Sep 23 - 06 Dec 23
रवि	06 Dec 23 - 31 Dec 23

मंगल

	31 Dec 2023 - 05 Dec 2024
मंगल	31 Dec 23 - 19 Jan 24
राहु	19 Jan 24 - 11 Mar 24
गुरु	11 Mar 24 - 25 Apr 24
शनि	25 Apr 24 - 18 Jun 24
बुध	18 Jun 24 - 05 Aug 24
केतु	05 Aug 24 - 25 Aug 24
शुक्र	25 Aug 24 - 21 Oct 24
रवि	21 Oct 24 - 07 Nov 24
चन्द्र	07 Nov 24 - 05 Dec 24

राहु

	05 Dec 2024 - 01 May 2027
राहु	05 Dec 24 - 16 Apr 25
गुरु	16 Apr 25 - 11 Aug 25
शनि	11 Aug 25 - 28 Dec 25
बुध	28 Dec 25 - 01 May 26
केतु	01 May 26 - 21 Jun 26
शुक्र	21 Jun 26 - 14 Nov 26
रवि	14 Nov 26 - 28 Dec 26
चन्द्र	28 Dec 26 - 11 Mar 27
मंगल	11 Mar 27 - 01 May 27

आपके बच्चे की जन्मकुण्डली, आपके लिये

किसी भी व्यक्ति के लिये जीवन की सबसे अनमोल घड़ियों में से एक वह पल है जब वह अपनी शिशु को पहली बार छूता है. वह बच्चा पूरे परिवार को विधाता की अनमोल भेंट है जिसके सहारे जीवन–चक्र चलता है.

क्योंकि बच्चों पर परिवार का भविष्य टिका है इसलिये यह स्वाभाविक है कि माता–पिता के मन में यह जानने की इच्छा हो कि उनके बच्चे का भविष्य क्या है और किस प्रकार उसे और भी उज्जवल बनाया जा सकता है जिससे वह अपने परिवार का गौरव राष्ट्र व पूरे विश्व में फैलाये व अपनी जिंदगी सु ख–पूर्वक जी सके.

ज्योतिष द्वारा किसी बच्चे के प्राकृतिक आचरण, झुकाव, कौशल, गुण, अवगुण आदी को समझा जा सकता है. अगर अभिभावक यह जानें की बच्चे के भविष्य को अनुकूल बनाने के लिये क्या कदम उठानें होंगे तो वह इस जानकारी का सदुपयोग कर बच्चे को ज्यादा से ज्यादा भाग्यशाली बना सकते हैं.

इस ज्योतिषीय रिपोर्ट में आपके बच्चे की कुण्डली का विश्लेषण है जिसके द्वारा आप जान पायेंगे कि बचपन में व बड़े होने तक, किस तरह की समस्यायों व मौंको से आपके बच्चे का सामना होगा.

लग्न, राशी आदी

आपके बच्चे पर लग्न का प्रभाव

आपकी संतान का जन्म कन्या लग्न में हुआ है. यह स्वभाव से अन्तर्मुखी होगा. बुद्धिमान होने के साथ ही साथ इनमें विषयों को परखने की भी योग्यता होगी. विभिन्न भाषाएं सीखने का इन्हें शौक हो सकता है. चतुराई और सूझ–बूझ से अपना काम निकालने की कोशिश करेगा. अपने आकर्षक व्यक्तित्व की वजह से मित्रों एवं विपरीत लिंग के व्यक्तियों में यह लोकप्रिय हो सकता है.

किसी अच्छे काम के लिए झूठ बोलना पड़ेगा तब भी यह असत्य बोल सकता है अन्यथा सामान्य रूप से सत्य बोलने की कोशिश करेगा. यह नियम–कानूनों को समझने वाला हो सकता है. इनके चेहरे पर मायूसी का भाव कम ही आएगा. इनकी व्यवहारकुशलता को देखकर लोग इन्हें सम्मान देंगे. संगीत के प्रति इनमें लगाव रह सकता है.

आपके बच्चे पर राशी का प्रभाव

आपके बच्चे की जन्म राशि कुम्भ है. शारीरिक तौर पर यह हृष्ट–पुष्ट होगा. गर्दन तथा होंठ मोटे होंगे. सिर पर बाल कम हो सकते हैं. पेट बाहर न निकले इसके लिए इन्हें योग और व्यायाम करना होगा. इन्हें प्यास अधिक लगेगी अतः पानी खूब पीएगा. मन अस्थिर और कल्पनाशील होगा. एक के बाद एक विचार मन में उभरते रहेंगे अतः, किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले बहुत अधिक सोचेगा. स्वभाव से थोड़ा चंचल और बातूनी होगा.

आपका यह बच्चा बुद्धिमान होगा और चतुराई भरी बातों से काम निकालने की कोशिश करेगा. प्रतिष्ठित

एवं वरिष्ठ लोगों से मित्रता करना इन्हें पसंद होगा. अपने आकर्षक व्यक्तित्व से यह जहां भी होगा लोगों का प्रिय बनकर रहेगा. इनके अंदर किसी बात का भय नहीं होगा. अगर कुछ ग़लत होता देखेगा तो अपनी ओजपूर्ण बातों से लोगों को अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित करेगा.

जरूरत के समय उदारता पूर्वक लोगों की सहायता करने की इनमें प्रवृति होगी. जो भी इनकी सहायता करेगा उनके एहसान को यह याद रखेगा. संभावना है कि, आपकी इस संतान को वाहन सुख प्राप्त हो सकता है. इन्हें वात सम्बन्धी रोग होने की आशंका रहेगी.

बच्चे के अंदर अच्छाईयों के साथ ही साथ कुछ कमियां भी हो सकती हैं जिन्हें दूर करने का आपको प्रयास करना चाहिए. यह कमियां हैं अहंकार और द्वेष की भावना. आलस्य भी इन पर हावी रह सकता है.

बच्चे पर जन्म वार का प्रभाव

आपकी संतान का जन्म सोमवार के दिन हुआ है. जिसका प्रभाव भी आपके बच्चे में दृष्टिगत होगा. इनके स्वभाव में शीतलता रहेगी. यह खुश रहने की कोशिश करेगा और दूसरों को भी खुशी देने की इनके अंदर तमन्ना रहेगी. सभी के साथ मीठे अल्फाजों में बात करेगा किन्तु, अनावश्यक बातों में समय नष्ट करना इन्हें पसंद नहीं होगा. इनके अंदर परोपकार की भावना आती रहेगी और मौका आने पर लोगों की सहायता करने के लिए भी आगे आएगा.

पढ़ाई–लिखाई में यह होशियार होने के साथ ही साथ कलाओं का भी जानकार बन सकता है. आपका यह बच्चा काफी सहनशील होगा, यह सुख–दुःख सब में सम रहेगा और साहस पूर्वक परिस्थितियों का मुकाबला करेगा. बड़ा होकर यह धन–सम्पत्ति एवं ऐशो–आराम प्राप्त कर सकता है. सर्दी–खांसी एवं वायु विकार की इन्हें शिकायत रह सकती है. इन चीजों का ध्यान रखना होगा.

आपके बच्चे का जन्म नक्षत्र

आपकी संतान का जन्म धनिष्ठा नक्षत्र में हुआ है जिसका स्वामी ग्रह मंगल है. आपका बच्चा निडर होगा. गीत–संगीत सुनने का उन्हें शौक हो सकता है. आपके बच्चे में दया की भावना रहेगी यह दूसरों की मदद के लिए सदैव तैयार रहेगा. ईश्वर के प्रति इनके मन में श्रद्धा रहेगी. इनसे कोई बल प्रयोग द्व ारा अथवा दबाव डालकर कार्य नहीं करवा सकता है. इनसे काम करवाने के लिए स्नेह और प्रेमपूर्ण व्यवहार की आवश्यकता होगी.

इनमें अधिक से अधिक धन जमा करने की प्रवृति होगी इसके लिए मेहनत एवं बुद्धि से काफी धन कमाएगा. खर्च के मामले में हाथ सख़्त रखेगा. समाज में इनकी अच्छी प्रतिष्ठा होगी. सरकार अथवा सरकारी अधिकारियों से इन्हें सम्मान मिल सकता है. इनके विरोधियों की संख्या कम होगी.

नक्षत्र के अनुसार बच्चे के लिये शुभ नामाक्षर

धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में आपके बच्चे का जन्म हुआ है. बच्चे का नामकरण करते समय नक्षत्र के चरणानुसार अक्षर का चयन करके बच्चे का नाम रखें तो यह बच्चे के लिए शुभ फलदायी होगा. इस लिहाज से 'गू' अक्षर से बनने वाला नाम आपके बच्चे के लिए उपयुक्त होगा.

अगर आपको 'गू' अक्षर से बनने वाला नाम पसंद नहीं है तो धनिष्ठा नक्षत्र के अन्य तीनों चरणों के अ क्षरों के आधार पर भी बच्चे का नाम रख सकते हैं. यह तीन अन्य अक्षर हैं गा, गी, और गे इन अक्षरों से बनने वाला नाम भी आपके बच्चे के लिए शुभ फलदायी हो सकता है.

विभिन्न भावों में ग्रहों की स्थिति का बच्चे पर प्रभाव

लग्न कुण्डली में सूर्य का फल

सूर्य इस बच्चे की कुण्डली के चतुर्थ भाव में बलवान स्थिति में है जिससे बच्चे की मानसिक स्थिति काफी अच्छी होगी. इनमें आत्मविश्वास भरपूर होगा. माध्यमिक शिक्षा के दौरान पढ़ाई–लिखाई की ओर इनका रूझान बढ़ेगा जिनसे इन्हें अच्छा परिणाम मिल सकता है. घूमना–फिरने इन्हें अच्छा लगेगा. इनके विचारों में दार्शनिकता का भाव होगा.

इस बच्चे का पिता के साथ अच्छा सम्बन्ध रह सकता है. पिता से इन्हें आवश्यक सहयोग एवं सुख प्राप्त होगा. सूर्य की यह स्थिति इन्हें वाहन सुख के साथ ही साथ भौतिक सुख के अन्य साधन दिलाने में मददगार होगी. आपका यह बच्चा समाज में सम्मानित व्यक्ति के रूप में आदर प्राप्त करेगा.

लग्न कुण्डली में बुध की स्थिति का फल

बुध आपके बच्चे की कुण्डली के पंचम भाव में बलवान स्थिति में है जिसका शुभ फल आपके बच्चे को मिलता रहेगा. आपके बच्चे की बौद्धिक क्षमता अच्छी होगी इससे किसी भी विषय को जल्दी समझ लेगा .

अपने इस गुण से यह अच्छे छात्र के रूप में शुमार किया जाएगा. गणित विषय का यह अच्छा जानकार हो सकता है. आपका यह बच्चा व्यवहार कुशल होगा और अपने छोटे भाई–बहनों से मधुर सम्बन्ध बनाकर रखेगा. इनकी वाणी प्रभावशाली होगी.

लग्न कुण्डली में शुक्र की स्थिति का फल

शुक्र आपके बच्चे की कुण्डली में बलवान स्थिति में है पांचवें घर में बैठा है. आपके बच्चे में सुन्दर दि खने की गहरी चाहत होगी. छात्र जीवन में समय–समय पर यह सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेता रहेगा. इनमें अभिनय के प्रति अधिक रूझान होगा. इनके माता–पिता चाहें तो इन्हें उचित प्रशिक्षण दिलवाकर इनकी कला को निखारने में योगदान दे सकते हैं.

इस बच्चे का मन चंचल रह सकता है अतः उसे अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देनी होगी. इनके मित्रों में कई विपरीत लिंग के व्यक्ति भी होंगे. सुख–वैभव से परिपूर्ण जीवन जीना आपके बच्चे को अच्छा लगेगा.

लग्न कुण्डली में मंगल की स्थिति का फल

मंगल इस बच्चे की कुण्डली के तीसरे घर में मजबूत स्थिति में है जो कई मायने में आपके बच्चे के लिए लाभप्रद होगा. बच्चे के अंदर जोश और उत्साह के साथ ही साथ साहस भी भरपूर होगा जिसे बनाए रखेंगें तो जीवन के हर मोड़ पर सामने आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ने में इन्हें आसानी होगी.

प्रयास करने पर यह प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकता है. आपका यह बच्चा जहां तक संभव होगा सत्य बोलेगा. ईश्वर के प्रति इनमें आस्था रहेगी और धर्म–कर्म के कार्यों में भाग लेगा.

लग्न कुण्डली में गुरु की स्थिति का फल

इस बच्चे की जन्मपत्री में गुरू दशम भाव में बैठा है और कमज़ोर अवस्था में है. यह बहुत अधिक महत्वाकांक्षी होगा और अपनी क्षमता से बढ़कर कार्य करने की कोशिश करेगा. इनकी इस प्रवृति के कारण इनकी योग्यता वह सम्मान नहीं मिलेगा जिनके यह हकदार होंगे.

इनके लिए अच्छा होगा कि अपने ज्ञान और योग्यता में निरन्तर वृद्धि के लिए प्रयास करते रहें और अपने से अनुभवी व्यक्तियों के अनुभव से सीख लें. इससे उन्नति की राह पर आगे बढ़ना इनके लिए आसान हो सकता है. इनके अभिभावक को बचपन से ही इन्हें सीखाना चाहिए कि मन को स्थिर र खकर कोई भी फैसला लें और अपने निर्णय में बार–बार परिवर्तन न करें. आपके इस बच्चे को वित्तीय क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिल सकता है.

लग्न कुण्डली में शनि की स्थिति का फल

बलवान शनि इस बच्चे की कुण्डली में चतुर्थ भाव में विराजमान है. यह बच्चा बहुत ही सहनशील होगा. इनका मन शांत रहेगा जिससे ध्यान पूर्वक सभी कार्यों को पूरा करेगा. यह अच्छी तरह समझकर पढ़ेगा जिससे पढ़ने की रफ्तार धीमी हो सकती है किन्तु, ज्ञान इनमें अधिक होगा.

माध्यमिक शिक्षा के दौरान मेहनत और लगन से किये गये प्रयास से इन्हें अच्छा परिणाम मिलेगा. जिससे सभी लोगों की नज़रों में इनका सम्मान बढ़ेगा. तकनीकी विषय आपके बच्चे को अधिक पसंद होंगे. इस विषय में शिक्षा ग्रहण करने पर यह अच्छा तकनीशियन बन सकता है. यह अपने सभी कार्यों में नयापन लाने की कोशिश करेगा.

लग्न कुण्डली में चंद्र की स्थिति

बलवान चन्द्र आपके बच्चे की कुण्डली में छठे भाव में विराजमान है. इससे इनका मन शांत होगा.

इनकी सोच सकारात्मक होगी. अपने ऊँचे मनोबल से जीवन में आने वाली चुनौतियों का डटकर सामना करेगा. शिक्षा में अच्छा परिणाम पाने के लिए इन्हें कड़ी मेहनत करनी होगी. इनके बहुत से प्रतिद्वंद्वी हो सकते हैं. जिनसे आगे निकलने के लिए अपनी तैयारी पूरी रखनी होगी उन्हें कम आंकना नुकसानदेय हो सकता है.

लग्न कुण्डली में राहु की स्थिति का फल

इस बच्चे की कुण्डली में पंचम भाव में बैठा राहु बलवान स्थिति में है. आपके इस बच्चे में अच्छी समझ होगी. छात्र जीवन में अपनी पढ़ाई को लेकर वह गंभीर रहेगा और योजनाबद्ध तरीके से पढ़ेगा इससे इनकी शिक्षा का स्तर ऊँचा होगा. यह किसी विषय पर शोध भी कर सकता है, ऐसी संभावना है. शिक्षा क्षेत्र में इन्हें अच्छा सम्मान मिलेगा.

आपके बच्चे को परम्परागत शिक्षा की बजाय नई चीजों को पढ़ने के शौक होगा. इनकी पढ़ाई का तरीका भी गैर परम्परागत हो सकता है. यह अपने कार्यो से स्वयं प्रेरणा लेगा और पहले से बेहतर तरीके से कार्य करने का प्रयास करेगा. इनमें चतुराई भी मौजूद रहेगी. यह नीतिवान होगा.

लग्न कुण्डली में केतु की स्थिति का फल

केतु इस बच्चे कुण्डली के एकादश भाव में कमज़ोर अवस्था में है. कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए इन्हें नैतिक नियमों का पालन करते हुए कार्य करने की सलाह देनी होगी. इन्हें यह भी बताना होगा कि व्यावसायिक क्षेत्र में वाद–विवाद से दूर रहना चाहिए यह कैरियर के लिए अच्छा होगा.

बड़े भाई के साथ मधुर सम्बन्ध बनाकर रखने से इनकी आय में वृद्धि हो सकती है. केतु की इस स्थिति में इनके लिए शेयर, रेस एवं लॉटरी में धन लगाना नुकसानदेय हो सकता है अतः इनसे अपने बच्चे को दूर रखने की कोशिश करें. इन्हें अपने कार्यक्षेत्र में अधिक काम करना पड़ सकता है.

बच्चे की शिक्षा–दीक्षा

सभी माता–पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करें इसके लिए वह अपने बच्चे को हर वह आवश्यक सुविधाएं देने का प्रयत्न करते हैं जिससे बच्चा अच्छा पढ़–लिख सके. लेकिन, होता यह है कि कुछ बच्चे पढ़ाई में बहुत ही होशियार होते हैं. उन्हें पढ़ना–लिखना पसंद होता जबकि, कुछ बच्चों को पढ़ाई–लिखाई के साथ दूसरी चीजों में अधिक रूचि होने से पढ़ाई की ओर से उनका ध्यान कम होता जाता है और पढाई में पीछे होते चले जाते हैं.

कुछ बच्चे पढ़ने में होशियार भी होते हैं किन्तु परिस्थितिवश उनकी पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है और शिक्षा अधूरी रह जाती है. कुछ ऐसे भी बच्चे होते हैं जो पढ़ाई बीच में छूट जाने के बाद भी अपनी लगनशीलता से पढ़ाई पूरी कर लेते हैं. इस प्रकार की स्थितियों का कारण ज्योतिषशास्त्र में पंचम भाव और पंचमेश को माना गया है. इनकी स्थिति कुण्डली में जैसी होती है उसी अनुसार शिक्षा की स्थिति

होती है. इसी आधार पर आपके बच्चे की शैक्षिणिक स्थिति की जानकारी दी जा रही है.

पंचम भाव का स्वामी

आपके बच्चे की कुण्डली में पंचम भाव पीड़ित है. आशंका है कि आपके बच्चे की रूचि शिक्षा में कम रहेगी अतः उनकी पढ़ाई–लिखाई पर आपको अधिक ध्यान देना होगा. यह भी हो सकता है कि किसी कारणवश इनकी शिक्षा में बाधा आएगी. शिक्षा के प्रति लगनशीलता होने पर बाधाओं के बावजूद यह अपनी शिक्षा पूरी करने में कामयाब हो सकता है अन्यथा शिक्षा बीच में छूट सकती है.

पंचम भाव

आपके बच्चे की कुण्डली में पंचम भाव का स्वामी बलवान अवस्था में है इससे वह काफी बुद्धिमान होगा . कक्षा में होनहार छात्रों में इनकी गिनती होगी. इनकी पढ़ाई–लिखाई के लिए किसी को भी अधिक चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है. इसे सिर्फ मार्ग दर्शन देते रहिए, पढ़ने में यह खुद रूचि लेगा . यह उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त कर सकता है.

निष्कर्ष

आपके बच्चे की कुण्डली में पंचम भाव तथा पंचमेश दोनों ही बलवान अवस्था में हैं इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चे की पढ़ाई अच्छी होगी. उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करेगा. इनकी शिक्षा में बाधा आने की गुंजाइश कम है.

आपके बच्चे का प्रोफेशन

माता–पिता अपने बच्चे के भविष्य के लिए सर्वाधिक चिंतित रहते हैं. बच्चे से उनकी बड़ी–बड़ी आशाएं बंधी रहती है. कोई अपने बच्चे को डाक्टर बनाना चाहता है तो कोई इंजीनियर. कुछ लोग अपने बच्चे को सरकारी महकमें में देखना चाहते हैं. इसके लिए माता–पिता बच्चे को काफी प्रेरित भी करते हैं और इस पर काफी खर्च भी करते हैं लेकिन, हर किसी का सपना पूरा नहीं होता है. ज्योतिषशास्त्र के अनुसार आजीविका के विषय में दशम भाव और दशमेश की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. इनकी स्थिति को देखकर बच्चे को उनकी आजीविका तलाश करने में सहयोग करें तो बच्चा अपने कार्यक्षेत्र में जल्दी और अच्छी सफलता प्राप्त कर सकता है.

दशम भाव के स्वामी ग्रह का प्रभाव

आपके बच्चे की कुण्डली में आजीविका स्थान यानी दशम भाव का स्वामी बुध है. इनमें लेखन एवं रिपोर्टिंग की अच्छी योग्यता होगी. अपने इस गुण से यह लेखक, पत्रकार, स्क्रिप्ट राईटर के तौर पर कार्य करते हुए मान–सम्मान प्राप्त कर सकता है. पढ़ने–लिखने में इनकी रूचि होगी. शिक्षण से जुड़े क्षेत्र में भी इनके लिए अच्छी संभावना है.

बुध के प्रभाव से प्रशिक्षण और ज्ञान हासिल करने पर इन्हें गणना से जुड़े क्षेत्र एवं प्रबंधन में आगे बढ़ने का मौका मिलेगा. निर्यात का कार्य भी आजीविका की दृष्टि से आपके बच्चे के लिए लाभप्रद होगा. वास्तुशास्त्र की जानकारी हासिल करके भी यह अपना कैरियर संवार सकता है.

दशम भाव स्वामी का कुंडली में स्थान

दशमेश इस बच्चे की कुण्डली में पंचम भाव में विराजमान है. संभावना है कि इन्हें अपने काम में बार–बार परिवर्तन करना पड़ सकता है. समय–समय पर ट्रेनिंग कार्यक्रमों में भाग लेना एवं अपने ज्ञान को बढ़ाते रहना आजीविका में सफलता की दृष्टि से इनके लिए फायदेमंद रहेगा. आपके बच्चे की रूचि खेलों में है तो उसे प्रोत्साहन दीजिए, कैरियर की दृष्टि से यह क्षेत्र इनके लिए अच्छा रहेगा.

बच्चे का स्वास्थ

सभी माता–पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे स्वस्थ और सेहतमंद रहें. इसके लिए अपनी क्षमता के अनुसार बच्चे को पौष्टिक आहार एवं अन्य सुविधाएं भी देते हैं. ऐसा होने पर भी देखने में यह आता है कि कुछ बच्चे अक्सर बीमार रहते हैं. ज्योतिषशास्त्र के मुताबिक यह बच्चे की कुण्डली में मौजूद लग्न, लग्नेश, छठे भाव एवं चन्द्र और चन्द्र जिस राशि में बैठा है उस राशि के स्वामी की स्थिति पर निर्भर करता है कि बच्चे की सेहत कैसी होगी. इन्हीं सभी तथ्यों का विश्लेषण करते हुए यहां आपके बच्चे की सेहत की जानकारी दी जा रही है.

लग्न भाव और स्वास्थ

आपके इस बच्चे का स्वास्थ्य कुछ कमज़ोर रह सकता है. लग्न भाव बलवान नहीं होने से बच्चे में रोग प्रतिरोधी क्षमता की कमी होने की भी आशंका है. बच्चे की सेहत पर आपको अधिक ध्यान देगा. संभावना है कि स्वास्थ्य की अनदेखी करने पर छोटी–मोटी बीमारियां भी बड़ा रूप ले सकती है.

लग्न भाव का स्वामी

बच्चे की कुण्डली में लग्नेश का बलवान होना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा संकेत है. यह बच्चा शारीरिक तौर पर मजबूत होगा. इनके अंदर रोग से लड़ने की क्षमता मौजूद होगी अतः यह जल्दी बीमार नहीं होगा. छोटी–मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी आ सकती है लेकिन, अधिक समय तक इनका प्रभाव नहीं रहेगा.

चंद्र की स्थिति

इस बच्चे की कुण्डली में चन्द्रमा बलवान है जिससे बचपन में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां इन्हें अधिक नहीं सताएगी. छोटी–मोटी परेशानी कभी–कभी आ सकती है लेकिन, यह अधिक तकलीफदेय नहीं होगी. बड़े होने पर भी बच्चे की सेहत सामान्य तौर पर अच्छी रहेगी. मानसिक तौर पर भी यह स्वास्थ्य रहेगा.

बच्चे की राशी का स्वामी

चन्द्रमा जिस राशि में बैठा है उस राशि का स्वामी बच्चे की कुण्डली में बलवान स्थिति में है. इससे बच्चे में रोग प्रतिरोधी क्षमता अच्छी हो सकती है अतः बच्चा जल्दी बीमार नहीं होगा. छोटी–मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां आएंगी भी तो बच्चे को अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा. स्वास्थ्य लाभ इन्हें जल्दी मिल जाएगा.

बच्चे के स्वास्थ पर निष्कर्ष

आपके बच्चे की कुण्डली में लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा, चन्द्र राशिश तथा अन्य सभी तथ्यों का आंकलन करने से यह निष्कर्ष निकल रहा है कि बच्चे का शरीर अधिक संवेदनशील होगा. स्वास्थ्य के मामले में जरा सी लापरवाही इन्हें बीमार कर सकती है. समय पर चिकित्सक से परामर्श लेने पर जल्दी स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है.

बच्चे की कुंडली से माता–पिता के स्वास्थ का विश्लेषण

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बच्चे की कुण्डली से भी उनके माता–पिता के विषय में जानकारी मिल जाती है. जिनके पास अपनी जन्म कुण्डली न हो वह बच्चे की कुण्डली से भी अपने विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. बड़े बच्चे की कुण्डली से पिता के विषय में तथा छोटे बच्चे की कुण्डली से माता की जानकारी मिलती है. अगर संतान एक ही हो तब माता–पिता दोनों ही उसी बच्चे की कुण्डली से अपने बारे में जानकारी ले सकते हैं.

माता के विषय में बच्चे की कुण्डली का चतुर्थ भाव, चतुर्थेश एवं चन्द्रमा ज्ञान देता है. सूर्य एवं नवम भाव तथा नवमेश पिता के विषय में बताता है. ज्योतिषशास्त्र के इसी सिद्धांत के आधार पर बच्चे के माता–पिता के स्वास्थ्य के विषय में यहां फलादेश किया गया है.

माता का स्वास्थ

चतुर्थ भाव और माता का स्वास्थ

इस बच्चे की कुण्डली में चतुर्थ भाव बलवान है. जो इनकी मॉ के स्वास्थ्य के लिए शुभ फलदायी है. इनकी मॉ की सेहत अच्छी होगी वह जल्दी बीमार नहीं होंगी. जब कभी बीमार भी होंगी तो उन्हें स्वास्थ्य लाभ जल्दी मिल जाएगा.

चतुर्थ भाव स्वामी का माता के स्वास्थ पर प्रभाव

बच्चे की कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी निर्बल अवस्था में है अतः यह बच्चे की मॉ को स्वास्थ्य लाभ देने में असमर्थ रहेगा. रोग इनकी मॉ को जल्दी प्रभावित कर सकता है. स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखेंगी तो मॉ शारीरिक तौर पर कमज़ोर हो सकती हैं.

बच्चे की कुण्डली में चन्द्र और माता का स्वास्थ

बच्चे की कुण्डली में चन्द्रमा का बल कुछ कम है इससे बच्चे की मॉ में रोग प्रतिरोधी क्षमता की कमी हो सकती है. बच्चे की मॉ अपनी सेहत का ध्यान रखें तो आमतौर पर स्वस्थ्य रहेंगी. कभी–कभी छोटी–मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी इन्हें हो सकती हैं.

माता के स्वास्थ का निष्कर्ष

बच्चे की कुण्डली में चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, चन्द्रमा तथा माता के स्वास्थ्य से संबंधित अन्य तथ्यों का परीक्षण करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चे की मॉ की सेहत मध्यम होगी. उन्हें स्वास्थ्य के मामले में सचेत रहना चाहिए. समयांतराल पर उनकी सेहत में उतार–चढ़ाव हो सकता है.

पिता का स्वास्थ

नवम भाव और पिता का स्वास्थ

बच्चे की कुण्डली में नवम भव निर्बल है. बच्चे के पिता को अपनी सेहत का अधिक ध्यान रखना होगा. स्वास्थ्य के मामले में लापरवाही अस्वस्थता का कारण बन सकती है. संभावना है कि छोटी–मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उन्हें अक्सर परेशान कर सकती हैं.

नवम भाव स्वामी का पिता के स्वास्थ पर प्रभाव

इस बच्चे की कुण्डली में नवमेश निर्बल है अतः नवमेश इनके पिता को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने में अ क्षम रहेगा. संभावना है कि इनके पिता में रोग प्रतिरोधी क्षमता की कमी होने के कारण बीमारियां इन्हें आसानी से अपना शिकार बना सकती हैं. इनके पिता स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं रहेंगे तो अक्सर किसी न किसी रोग से पीड़ित रह सकते हैं.

बच्चे की कुण्डली में सूर्य और पिता का स्वास्थ

बच्चे की कुण्डली में पिता का कारक ग्रह सूर्य बलवान अवस्था में है. सूर्य इनके पिता को अपना पूर्ण शुभ फल देगा फलतः इनके पिता तंदुरूस्त रहेंगे. वह जल्दी बीमार नहीं होंगे. इनके पिता में चुस्ती–फूर्ति बनी रहेगी.

पिता के स्वास्थ का निष्कर्ष

बच्चे की कुण्डली में नवम भाव, नवमेश, सूर्य एवं पिता के स्वास्थ्य से सम्बन्धित अन्य तथ्यों का आंकलन करने पर निष्कर्ष निकल रहा है कि बच्चे के पिता का स्वास्थ्य अच्छा होगा. वह जल्दी बीमार नहीं होंगे. छोटी–मोटी बीमारियां होंगी भी तो उनसे जल्दी निजात मिल जाएगी.

आपके बच्चे के लिये ज्योतिष से उपाय

ऐसी कोई जन्मकुण्डली नहीं होती जिसमें हर योग अच्छा हो. अच्छे बुरे योगों के मिश्रण से व्यक्ति का भाग्य निर्मित होता है. अगर अच्छे योग प्रबल हैं तो वह बुरे योगों पर विजय पा कर व्यक्ति को सफल बनाते हैं.

ज्योतिष का कहना है कि भाग्य में लिखी घटना होती ही है, लेकिन उपायों द्वारा अपने कुण्डली के अशुभ योगों का प्रभाव कम किया जा सकता है जिससे आपके बच्चे के भाग्य में वृद्धी हो सकती है.

नीचे आपके बच्चे की कुण्डली के अनुसार विभिन्न ज्योतिषीय उपाय दिये गये हैं जिनका प्रयोग आप अपने बच्चे के भाग्यवर्धन के लिये कर सकते हैं.

लग्न के लिये उपाय

आपके बच्चे का लग्न कन्या है. इस लग्न का स्वामी ग्रह बुध है. बुध ग्रह का मंत्र जप बच्चे के लिए कई अर्थों में लाभप्रद होगा. इससे बच्चे का शारीरिक विकास होगा. मानसिक भटकाव में कमी आएगी. बुध बच्चे के अंदर इस बात की प्रेरणा देगा कि वह अपने लक्ष्य की ओर ध्यान केन्द्रित करे.

बुध का मंत्र है :– " ऊँ बुं बुधाय नमः " इस मंत्र का जाप आप सुबह या संध्या समय में कभी भी कर सकते हैं. प्रतिदिन 108 बार मंत्र का जाप करना उत्तम होगा. जब समय का अभाव हो तब ग्यारह बार भी मंत्र का जप कर सकते हैं.

कमज़ोर ग्रहों के लिये उपाय

गुरू आपके बच्चे की कुण्डली में निर्बल अवस्था में स्थित है. बच्चे को गुरू के शुभ फल प्राप्त हों इसके लिए आप अपने बच्चे के नाम से अपनी श्रद्धानुसार गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान कर सकते हैं. गुरू से सम्बन्धित वस्तुएं हैं पुखराज, पीले वस्त्र, पीले फूल, चने की दाल, गुड़, शक्कर एवं पुस्तकें. इन वस्तुओं का दान गुरूवार के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत होकर किसी जरूरतमंद व्यक्ति को करना अधिक लाभप्रद होगा.

इस उपाय को करने से बच्चे को गुरू ग्रह की कृपा प्राप्त होगी इससे उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा. बच्चे के अंदर सोचने–समझने की शक्ति भी बढ़ेगी. बड़ों के प्रति आदर व श्रद्धा की भावना और व्यक्तित्व में निखार आएगा. नीतियों एवं नियमों का भी पालन करेगा.

केतु आपके बच्चे की कुण्डली में कमज़ोर अवस्था में है. बच्चे को केतु के शुभ फल प्राप्त हों इसके लिए आप अपने बच्चे के नाम से अपनी श्रद्धानुसार केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान कर सकते हैं. केतु से सम्बन्धित वस्तुएं हैं लहसुनिया, कम्बल, तम्बाकू, तिल, उड़द, धुएं जैसे रंग वाला वस्त्र. इन वस्तुओं का दान शनिवार अथवा मंगलवार के दिन सुबह स्नानादि से निवृत होकर करना चाहिए.

इन उपायों को करने से बच्चे के मन स्थिरता आएगी. बच्चे की सोच सार्थक और सकारात्मक दिशा में उन्मुख होगी. बच्चे के अंदर निर्णय क्षमता का विकास होगा. यह बच्चे के स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद रह सकता है.

कुछ मंत्र ऐसे भी हैं जिन्हें आप अपने बच्चे के लिए कर सकते हैं. आप अपने बच्चे की पढ़ाई के लिए और अच्छी विद्या प्राप्ति के लिए सरस्वती मंत्र का जाप कर सकते हैं. सरस्वती मंत्र है :–

" सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने, विद्यारुपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते।"

यदि आपका बच्चा बीमार होता है तब उसके जल्द स्वस्थ होने के लिए मृत्युंजय मंत्र का जप कर सकते हैं. मंत्र है :– " ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम, उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात। "

बच्चे की सद्बुद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जप कर सकते हैं. गयत्री मंत्र हैः–
" ऊँ भुर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात "